RNI No. RAJHIN/2015/63826

आपकी खबरों का संसार

अतुल्य संसार

साप्ताहिक

वर्षः 6 | अंक : 28 | जयपुर, बुधवार, 5 जनवरी, 2022 | पृष्ठः 8 | मूल्य : 6.00 रुपये

अपने व्यापार को दें गति
क्षेत्र में बनाएं अपनी पहचान
पम्पलेट से भी कम खर्च में
ज्यादा प्रचार
सम्पक करें
9351001100
अतुल्य संसार
आपकी खबरों का जहां

15 से 18 वर्ष आयुवर्ग के कोविड वैक्सीनेशन का शुभारंभ

ओमिक्रोन के खतरे से बचाव के लिए सुनिश्चित करें शत-प्रतिशत टीकाकरण : गहलोत

अतुल्य संसार

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि ओमिक्रॉन वैरिएंट के रूप में देश और दुनिया के सामने अस्तित्व का नया संकट आ खड़ा हुआ है। इस खतरे से मानव जाति की रक्षा के लिए जरूरी है कि जिन्हें वैक्सीन की दूसरी डोज लगे 6 माह से अधिक का समय हो गया है, ऐसे सभी लोगों को जरूरत के अनुसार बूस्टर डोज लगे तथा 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों का भी जल्द नि:शुल्क टीकाकरण शुरू हो। राज्य सरकार इस सम्बन्ध में शीघ्र निर्णय करने के लिए केन्द्र सरकार पर दबाव बनाएगी, ताकि तीसरी लहर के खतरे से प्रदेशवासियों को बचाया जा सके। उन्होंने निर्देश दिए कि जिस प्रकार राज्य सरकार ने प्रदेश में सभी वर्गों के सहयोग से अब तक वैक्सीनेशन का

शानदार प्रबंधन किया है आगे भी उसी भावना के साथ गांव-ढाणी तक 15 से 18वर्ष आयु वर्ग का शत-प्रतिशत टीकाकरण सुनिश्चित किया जाए।

श्री गहलोत सोमवार को राजकीय आदर्श बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गणगौरी बाजार में 15 से 18 वर्ष आयु वर्ग के निशुल्क टीकाकरण के शुभारम्भ कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों एवं अभिभावकों को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कोविड की प्रथम डोज लगवाने वाली 5 किशोरी बालिकाओं की हौसला अफजाई की तथा उन्हें अपनी ओर से चॉकलेट भेंट की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड महामारी के खतरे ने दुनिया को हिलाकर रख दिया है। पहली एवं दूसरी घातक लहर झेलने के बाद अब ओमिक्रॉन वैरिएंट के रूप में नया खतरा सामने है। दुनिया के अधिकतर देशों में पहुंच चुके ओमिक्रोन वैरिएंट के कारण तेजी से फैलते संक्रमण को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसके सुनामी का रूप लेने की चेतावनी दी है। हमें इस खतरे की गंभीरता को समझना होगा और बड़ों से लेकर बच्चों तक का शत-प्रतिशत वैक्सीनेशन सुनिश्चित करना होगा।

श्री गहलोत ने कहा कि दुनिया के कई मुल्कों में लोगों को बूस्टर डोज लग रही है और क्यूबा जैसे देश में तो दो साल तक के बच्चों का वैक्सीनेशन प्रारंभ हो गया है। देश में भी 15 साल से कम आयु के बच्चों के निशुल्क टीकाकरण तथा सभी को बूस्टर डोज के सम्बन्ध में केन्द्र सरकार देशवासियों की जीवन रक्षा के लिए जल्द निर्णय करे। मुख्यमंत्री ने कहा कि ओमिक्रोन वैरिएंट से फैलते संक्रमण के दृष्टिगत स्वास्थ्यकर्मी, फ्रंटलाइन वर्कर तथा 60 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों को बूस्टर डोज तथा 18 वर्ष से कम आयु के नागरिकों का टीकाकरण शुरू करने के लिए मैंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखा था।

निरोगी राजस्थान के संकल्प को पूरा करने में आयुष विभाग निभाएगा महत्वपूर्ण भूमिका : डॉ. सुभाग गर्ग

अतुल्य संसार

जयपुर। आयुष राज्य मंत्री डॉ. सुभाग गर्ग ने कहा कि निरोगी राजस्थान के संकल्प को पूरा करने में आयुष विभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आयुष की विधाएं आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी, सिद्वा, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में बेहद कारगर साबित हो रहा है।

डॉ गर्ग ने यह बात मंगलवार को सचिवालय के मंत्रालय भवन में होम्योपैथी एवं यूनानी विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा आगामी दिनों में केन्द्र सरकार को आयुष मिशन के तहत 300 ब्लॉक में इन्टीग्रेटेड हेल्थ एवं वेलनेस केन्द्र

चरणबद्व तरीके से खोलने के प्रस्ताव भेजें जाएंगे जिनमें आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी चिकित्सकीय सुविधाए एक साथ मिल पाएगी। उन्होंने अधिकारियों को विभागीय व्हाट्सएप ग्रुप बनाने के निर्देश दिए जिसमें आयुष चिकित्सकों के नियमित आने-जाने का समय, रोगियों की संख्या सहित विभिन्न जानकारी नियमित रुप से दी जाए जिससे चिकित्सों के हॉस्पिटल में बैठने के समय तथा लाभार्थियों की जानकारी हो सके।

डॉ. गर्ग ने बताया कि आगामी दो वर्षों में प्रदेश की जनता को आयुष की विधाओं के माध्यम से रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए जागरुक किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि वर्तमान में विभाग द्वारा पायलट प्रोजेक्ट के तहत सभी संभागों में रोग प्रतिरोधक क्षमता संबंधित स्कीनिंग करती गयी तथा एनीमिक पाए गए लोगों को निशुल्क होम्योपैथी, आयुर्वेदिक एवं यूनानी दवाईयां उपलब्ध करवाई गई।

सम्पादकीय

गरिमा का सवाल

जब समाज में विद्वेष फैलाने वालों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई नहीं होती या कार्रवाई को जांच के नाम पर लंबा खींचा जाता है या कहें टाला जाता है तो अपराधियों के हौसले और बुलंद हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि उनके कार्यों को मूक सहमति मिल रही है और उनकी हरकतों का दायरा जातीय तथा लैंगिकता की दीवारों को तोड़कर पूरे समाज को घायल करने लगता है। ये लोग किसी की प्रतिष्ठा और गरिमा की परवाह नहीं करते।'बुल्ली बाई एप का मामला ऐसा ही है, जिस पर मचे हंगामे के बाद राष्ट्रीय महिला आयोग ने तेजी से कार्रवाई के लिए दिल्ली पुलिस को लिखा है।

इस एप पर लगभग सौ प्रभावशाली मुस्लिम महिलाओं की तस्वीरें अपलोड करके अश्लील और अनर्गल बातें लिखी गई हैं। सोशल मीड़िया उपयोगकर्ताओं और महिला अधिकार समूहों में इस विषय पर भारी रोष है। 'बुल्ली बाई एप ने तस्वीरें अपलोड़ करके कुछ ऐसी ही हरकत की है, जैसी पिछले वर्ष जुलाई में 'सुल्ली ड़ील्स नामक एप ने की थी।

वस्तुत: दोनों एप एक जैसा ही काम करते हैं। एप को खोलने पर एक मुस्लिम महिला की तस्वीर बुल्ली बाई के तौर पर प्रकट होती है। ट्विटर पर अधिक फॉलोवर वाली (इनफ्लुएंसर) मुस्लिम महिलाओंग जिनमें पत्रकार भी शामिल हैग की तस्वीरें चुनिंदा तरीके से अपलोड़ की गई हैं। महिला आयोग ने उस महिला पत्रकार के ट्वीट का 'संज्ञान लिया, जिनकी तस्वीर एप में उपयोग की गई है।

महिला पत्रकार ने इस बाबत दिल्ली पुलिस की साइबर शाखा के समक्ष शिकायत दर्ज कराई है। दिल्ली पुलिस आयुक्त से तत्काल प्राथमिकी दर्ज करके त्वरित कार्रवाई करने को कहा गया है ताकि इस तरह के अपराध की पुनरावृत्ति नहीं हो। ऑल इंड़िया प्रोग्रेसिव वूमंस एसोसिएशन ने पीड़िताओं के साथ एकजुटता प्रदर्शित करते हुए आरोप लगाया है कि इस मामले के पीछे हिंदू सर्वोच्चतावादियों का हाथ है।

महिला अधिकार कार्यकर्ता शबनम हाशमी ने सवाल किया है कि बहुसंख्यक कब तक मूकदर्शक बने रहेंगे या सभी धर्मनिरपेक्ष लोग मानसिक और शारीरिक रूप से मृत हो चुके हैं। ट्विटर पर भी इस मामले में व्यापक प्रतिक्रिया हुई है। हालांकि सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने होस्टिंग प्लेटफार्म 'गिटहब के बुल्ली बाई एप के उपयोगकर्ताओं को ब्लॉक करने की पुष्टि की है। पर यहां सवाल उठता है कि जब 'सुल्ली ड़ील्स ने पिछले साल ऐसी ही हरकत की थी और दिल्ली तथा यूपी पुलिस ने मामले भी दर्ज किए थे तो दोषियों पर अब तक कार्रवाई क्यों नहीं हुई ?

कोरोना महामारी ने हमें अपनी जड़ों की ओर लौटने की बड़ी सीख दी है

आज पूरा विश्व ही आश्चर्यचकित है कि भारत ने कोरोना महामारी की प्रथम एवं द्वितीय लहर का, विकसित एवं अन्य कई देशों की तुलना में, इतना सफल तरीके से सामना कैसे किया है। विश्व के कई देश तो आज कोरोना महामारी की तीसरी एवं चौथी लहर से जूझते नजर आ रहे हैं, परंतु भारत में अभी तक तो कोरोना महामारी नियंत्रण में दिखाई दे रही है एवं इसकी तीसरी लहर की सम्भावना अब कम ही नजर आ रही है। हां, अब आगे देखने की बात है कि ओमीक्रॉन का प्रभाव भारत पर किस प्रकार पड़ता है।

कोरोना महामारी ने फरवरी 2020 के बाद जब भारत में अपने पांव पसारना शुरू किए थे तभी से यह देखने में आया था कि हिन्दू सनातनी परम्पराओं को अपना कर कोरोना महामारी के विपरीत प्रभाव को कम किया जा सकता है। कोरोना महामारी ने पूरे विश्व के लगभग सभी देशों को प्रभावित किया। कहीं-कहीं तो इस महामारी का प्रभाव इतना बलशाली रहा कि उस देश की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग इस बीमारी की चपेट में आकर संक्रमित हो गया। लगभग सभी देशों की अर्थव्यवस्थाएं तो चौपट हो ही गईं। भारत ने भी इस संदर्भ में कई चुनौतियों का सामना बहुत ही हिम्मत के साथ किया। हमारे देश में समाज के कई वर्गों पर कोरोना महामारी का व्यापक असर देखने में आया। जैसे कोरोना से संक्रमित परिवारों पर, स्वास्थ्य क्षेत्र में काम करने वाले परिवारों पर, मध्यमवर्गीय एवं गरीब परिवारों पर, छोटे कारोबारियों पर एवं आर्थिक गतिविधियों पर अलग-अलग प्रकार का दबाव देखने में आया। परंतु देश में उक्त वर्णित वर्गों पर आई इन चुनौतियों का समाधान निकालने के प्रयास केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक संस्थाओं एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा मिलकर किए गए। पूरा देश ही जैसे एक परिवार की तरह एक दूसरे की सहायता में तत्पर हो गया। कोरोना महामारी के कारण समाज के विभिन्न वर्गों पर आये दबाव को सभी वर्गों ने मिलकर कम करने में सफलता पाई।

विशेष रूप से कोरोना महामारी के दूसरे दौर के वक्त जब भारी संख्या में देश के नागरिक इस महामारी से ग्रसित हो रहे थे

एवं उनकी देखभाल के लिए उनके अपने परिवार के लोग चाह कर भी उपलब्ध नहीं हो पा रहे थे क्योंकि संक्रमित मरीजों को अलग रखना जरूरी था। ऐसे माहौल में देश के नागरिकों में डर एवं अवसाद की भावना पैदा हो रही थी। कई परिवारों में तो माता-पिता दोनों का देहांत हो जाने के बाद जब बच्चे अनाथ हो गए एवं इनके देखभाल की समस्या पैदा हो गई एवं कई मध्यमवर्गीय परिवारों ने अपनी बीमारी का इलाज कर्जा लेकर कराया, ऐसे में वे परिवार भारी ऋण के बोझ के तले दब गए। ऐसे समय में देश के धर्मगुरुओं से लेकर सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में काम कर रहे महानुभावों ने समाज में आए उक्त दबाव को कम करने का भरपूर प्रयास किया। उन्होंने प्रभावित परिवारों से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया, उन्हें ढाढस बन्धाया एवं उनके मन में सकारात्मक विचारों का संचार किया। देश पर आए इस संकट के समय लगभग पूरा समाज ही एक दूसरे के साथ हिम्मत के साथ खड़ा रहा। कई लोगों ने तो रचनात्मक कार्यों को करते हुए अपने आप को व्यस्त रखने का प्रयास किया। कोई भी भूखा ना रहे कोई भी बगैर इलाज के ना रहे, इसके लिए प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से इन लोगों ने अपने आप को सेवा के कार्यों से जोड़ लिया। यह सब केवल भारत में ही सम्भव है क्योंकि हिन्दू सनातनी परम्पराओं में वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत पर विश्वास किया जाता है। कोरोना महामारी के फैलने के बाद पूरे विश्व को ही ध्यान में आया कि भारतीय योग, ध्यान, शारीरिक व्यायाम, शुद्ध सात्विक आहार एवं उचित आयुर्वेदिक उपचार के साथ इस बीमारी से बचा जा सकता है। भारतीय विचार परंपरा में प्रकृति को भी भगवान का दर्जा दिया गया है।

ई-उत्पादों पर लगे आयात शुल्क

हालांकि विश्व व्यापार संगठन का 12वां मंत्रीस्तरीय सम्मेलन कोरोना के बढ़ते प्रकोप के चलते अभी स्थगित हो गया है, पर अब तक की तैयारी से स्पष्ट है कि इस सम्मेलन में हमेशा की भांति बड़े औद्योगिक एवं विकसित देश ऐसे प्रस्तावों को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे, जो उनकी कंपनियों के लिए तो हितकारी होंगे, लेकिन भारत समेत विकासशील देशों, खासतौर पर वहां के गरीबों के लिए अहितकारी होंगे.

प्रस्ताव यह है कि गैरकानूनी, गैररिर्पोटेड और गैरविनियमित मत्स्ययन के लिए दी जानेवाली सब्सिडी समाप्त हो, यानी सीधे-सीधे कोशिश यह है कि हमारे छोटे मछुआरों, जो अपने जीवनयापन के लिए लघुस्तरीय मत्स्ययन करते हैं, उनको सरकार कोई सहायता न दे पाए, लेकिन बड़े-बड़े ट्रॉलरों एवं जहाजों द्वारा गहरे समुद्र में मत्स्ययन के लिए सहायता में कटौती का कोई प्रस्ताव नहीं है.

भारत को कृषि उत्पादों की सरकारी खरीद के संदर्भ में, विकसित देशों द्वारा अभी तक जो कथित रियायत दी जा रही है, उसके स्थायी समाधान के नाम पर यह शर्त लादी जा रही है कि सरकार द्वारा खरीदे गये कृषि उत्पादों का निर्यात नहीं किया जा सकेगा. कई उदाहरण इंगित करते हैं कि पूर्व में हुए समझौते गैरबराबरी के समझौते थे, जिनमें विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के विकास को बाधित करने और उनकी सरकारों को अपने उद्योग, कृषि और अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों को किसी भी प्रकार की मदद से रोकने के प्रावधान किये गये थे, लेकिन जहां-जहां विकसित देशों की कंपनियों को फायदा पहुंच सकता था, उसके लिए विकासशील देशों से रियायतें लेने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी गयी.

कहा जाता है कि व्यापार एक युद्ध है. जब विकसित देश व्यापार वार्ताओं को एक युद्ध के रूप में देखते हैं, तब भारत को भी अपने हितों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए व्यापार वार्ताओं का सही उपयोग करना होगा. इस संदर्भ में संगठन के प्रारंभ से ही इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों पर टैरिफ स्थगन के अस्थायी प्रावधान को समाप्त करने हेतु प्रयास करने का समय आ गया है. गौरतलब है कि तब ऐसे उत्पादों में व्यापार बहुत सीमित था.

सूरजगढ़ में सिविल एवं न्यायिक कोर्ट खुलवाने के लिए जन समर्थन रैली

अतुल्य संसार

उदयपुरवाटी (सुमेर सिंह राव)। झुंझुनू जिले के सूरजगढ़ में सिविल एवं न्यायिक कोर्ट खुलवाने के लिए अभिभाषक संघ सूरजगढ़ के नेतृत्व में सूरजगढ़ शहर में जन समर्थन रैली निकाली गई और अभिभाषक संघ सूरजगढ़ सहित अन्य संगठनों ने मुंसिफ कोर्ट खुलवाने को लेकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया। जन समर्थन रैली में हिम्मत एनजीओ के संरक्षक एडवोकेट महेश ठोलिया व आदर्श समाज समिति इंडिया के अध्यक्ष धर्मपाल गाँधी सहित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों व क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया।

वरिष्ठ अधिवक्ता संदीप कुमार मान ने बताया कि कोर्ट खुलवाने को लेकर 27 दिसंबर से सूरजगढ़ अभिभाषक संघ की पेन डाउन हड़ताल चल रही है। लेकिन अभी तक सरकार ने कोई सुनवाई नहीं की है, जिसकी वजह से आज जनप्रतिनिधियों और क्षेत्रवासियों के समर्थन में आने से शहर में जन आक्रोश रैली निकाली गई है। जब तक सूरजगढ़ में कोर्ट नहीं खोला जाता है तब तक हमारा आंदोलन जारी रहेगा। मुंसिफ कोर्ट खुलवाने संबंधित मापदंड की सभी प्रक्रिया पूरी हो चुकी हैं। हाईकोर्ट ने भी स्वीकृति दे दी है। सिर्फ सरकार द्वारा वित्तीय स्वीकृति जारी करना बाकी है। आदर्श समाज समिति इंडिया के अध्यक्ष धर्मपाल गाँधी ने बताया कि मुंसिफ कोर्ट खुलवाने को लेकर सूरजगढ़ शहर में जन समर्थन रैली निकाली गई। रैली को संबोधित करते हुए सूरजगढ़ विधायक सुभाष पूनियां ने वित्तीय स्वीकृति के संबंध में विधानसभा में आवाज उठाने का आश्वासन दिया। व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष सेवाराम गुप्ता व सूरजगढ़ चेयरमैन श्रीमती पुष्पा देवी गुप्ता ने भी अभिभाषक संघ सूरजगढ़ का समर्थन करते हुए कोर्ट खुलवाने को लेकर पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। सूरजगगढ़ नगर पालिका के पूर्व चेयरमैन सुरेश कुमार शर्मा ने भी रैली में भाग लेकर समर्थन दिया। जाट महासभा के अध्यक्ष व वीर तेजाजी विकास संस्थान सूरजगढ़ के अध्यक्ष जगदेव सिंह खरड़िया व युवा किसान नेता राजेश गोदारा ने भी रैली में भाग लेकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन देते हुए अपना समर्थन दिया।

पंचायत समिति सूरजगढ़ के प्रधान बलवान सिंह व सरपंच फोरम के अध्यक्ष संदीप डैला सहित विभिन्न पंचायतों के सरपंचों ने रैली में भाग लेकर सूरजगढ़ में मुंसिफ कोर्ट खुलवाने के लिए मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया।

जन समर्थन रैली में हिम्मत एनजीओ के अध्यक्ष राजेंद्र सिहाग, सूरजगढ़ पंचायत समिति के प्रधान बलवान सिंह, आदर्श समाज समिति इंडिया के अध्यक्ष धर्मपाल गांधी, पंचायत समिति सदस्य और युवा नेता सोमवीर लांबा, जाट महासभा के अध्यक्ष जगदेव सिंह खरड़िया, सरपंच फोरम के अध्यक्ष संदीप डैला, गोपाल शर्मा सूरजगढ़, मदन गुर्जर काजड़ा, ओमप्रकाश सेवदा, राजेश गोदारा, राजपाल फोगाट, रोहतास टेलर सूरजगढ़, लोटिया सरपंच महावीर प्रसाद, जीणी सरपंच अमीलाल भड़िया, पूर्व सरपंच मास्टर लीलाराम भगीना, काजड़ा सरपंच मंजू तंवर, अड़ूका सरपंच शीशराम, भावठड़ी सरपंच सुनील धायल, भाजपा सूरजगढ़ मंडल अध्यक्ष संजय गोयल, स्वामीसेही सरपंच ईश्वर सिंह, उरीका सरपंच सायर कंवर, जाखोद सरपंच रूकेश देवी, बड़सरी का बास सरपंच रेणू, महपालवास सरपंच नीतू चौधरी, कलोठ कला सरपंच रामनिवास, सज्जन सोनी बलौदा, सुखबीर महपालवास, राजेंद्र हवलदार, कृष्ण कुमार बड़सरी का बास, संदीप भड़िया जीणी, सुनील बिजारणिया, राजेश कुमार पवन गुर्जर काजड़ा, नरेश कुमार फरट, बाबूलाल शर्मा, अभिभाषक संघ सूरजगढ़ के अध्यक्ष अशोक शर्मा, संदीप मान, एडवोकेट सोमवीर, रामेश्वरदयाल, सुरेश कुमार, सुरेंद्र सिंह तंवर, मदन सिंह राठौड़, एडवोकेट हवासिंह चौहान, भूषण, दीपक सैनी, एडवोकेट अजय कुमार नायक, कृष्णपाल सिंह, राजेश चिरानियां, संजू तंवर सुनील शर्मा, सत्यानंद, पिलानी अभिभाषक संघ के पूर्व अध्यक्ष विजय झांझड़िया, मनोज डिग्रवाल, पंकज खिंचड़, रतन लाल तंवर, विशनपाल आदि अन्य लोगों ने भाग लिया।

15 से 18 आयु वर्ग के लिए टीकाकरण शुरू

जिला कलेक्टर ने किया निरीक्षण, बच्चों का उत्साह बढ़ाया

अतुल्य संसार

बूंदी (शिवकुमार शर्मा)। बूंदी जिले में सोमवार से 15 से 18आयु वर्ग के किशोरों के लिए कोविड-19 टीकाकरण शुरू हो गया। जिला कलेक्टर रेणु जयपाल ने राजकीय महारानी उच्च माध्यमिक विद्यालय में टीकाकरण का निरीक्षण किया और विद्यार्थियों को टीके का महत्व बताते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। जिला कलेक्टर ने इस अवसर पर कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि कोरोना की तीसरी लहर शुरू होने के साथ ही बच्चों के लिए टीके की शुरुआत हो गई है। उन्होंने कहा कि 15 से 18 आयु वर्ग के विद्यार्थी एवं अन्य किशोर टीका जरूर लगवाएं और सुरक्षित रहें। उन्होंने अभिभावकों का भी आह्वान किया कि अपने बच्चों का टीकाकरण प्राथमिकता से कराएं और अपने परिवार को सुरक्षित बनाएं।

15 से 18 आयु वर्ग का टीकाकरण शुरू होने के पहले दिन ही जिले में 151 विद्यालयों में टीकाकरण केंद्रों पर चिकित्सा विभाग की टीम द्वारा टीके लगाए गए। बच्चों ने उत्साह के साथ टीकाकरण कराया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ महेंद्र त्रिपाठी ने बताया कि टीकाकरण के लिए प्रोटोकॉल के अनुसार व्यवस्थाएं की गई है। टीका पूरी तरह सुरक्षित है। अत: सभी अभिभावक अपने 15 से 18 आयु वर्ग के बच्चों का टीकाकरण अवश्य कराएं।

लोहार्गल में एनीकट का हुआ उद्घाटन

राजीव गांधी जल संचय योजना के अंतर्गत बनेगा एनीकट

अतुल्य संसार

उदयपुरवाटी (सुमेर सिंह राव)। लोहार्गल धाम में वन विभाग के द्वारा सूरज का बाग नला में डेम का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन लोहार्गल पीठाधीश्वर महंत अवधेशाचार्य महाराज ने किया। इस दौरान पीठाधीश्वर महंत अवधेश आचार्य महाराज ने बताया कि इस डैम से आसपास के वन्यजीवों को पेड़ पौधों को लाभ प्राप्त होगा। रेंजर रणवीर सिंह शेखावत ने जानकारी देते हुए बताया कि यह एनीकट राजीव गांधी जल संचय योजना के अंतर्गत बनाया जाएगा जिसकी स्वीकृत राशि साढ़े सात लाख रुपए होगी। इस दौरान रेंजर रणवीर सिंह, इंदर शर्मा, ठेकेदार फुला राम, वनपाल गिरधारी लाल, नारू राम इत्यादि मौजूद रहे।

तीसरी लहर को मात देने के लिए बच्चों के लगाया कोरोना वैक्सीन को टिका

उदयपुरवाटी में 15 से 18 वर्ष की उम्र के बच्चों को लगी पहली डोज

अतुल्य संसार

उदयपुरवाटी (सुमेर सिंह राव)। कस्बे में राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की

टीम द्वारा राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में 15 से 18 वर्ष की आयु वर्ग में स्कूल की छात्राओं को तीसरी लहर में कोरोना से बचने के लिए को-वैक्सीन की पहली डोज लगाई गई। वैक्सीनेटर एएनएम सुभिता कुमारी ने बताया कि बालिका स्कूल में आयुष चिकित्सक डॉक्टर परमानंद शर्मा के नेतृत्व में एवं कार्यवाहक प्राचार्य फतेह सिंह के सानिध्य में सन 2007 से पहले जिनका जन्म हुआ है।

उन छात्र-छात्राओं को को-वैक्सीन की प्रथम डोज दी गई। उदयपुरवाटी नगरपालिका में सीएचसी की तीन टीम बनाकर लगभग 250 छात्र-छात्राओं को वैक्सीन की डोज दी गई। टीकाकरण के दौरान सीएचए नवीन चाहर, मनीला, एएनएम सुनीता चौधरी ,सरीता, स्कूल व्याख्याता सुभाष जांगिड़, श्रीराम गुर्जर सहित मौजूद थे।

एक्सरसाइज के बिना भी रहना चाहते हैं फिट तो अपनाएं यह आसान टिप्स

आपने अक्सर लोगों को यह कहते हुए सुना होगा कि अगर अपनी सेहत का ख्याल रखना है तो एक्सरसाइज जरूर करनी चाहिए। सेहतमंद रहने और एक्सरसाइज करने का आपस में एक गहरा नाता है। लेकिन फिर भी ऐसे कई लोग होते हैं, जो एक्सरसाइज नहीं कर पाते। किसी के पास समय का अभाव है तो किसी को एक्सरसाइज करने में बहुत अधिक आलस्य आता है। जिसके कारण लोगों को कम उम्र से ही कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं होने लगती हैं। लेकिन अगर आप एक्सरसाइज किए बिना भी खुद को अधिक फिट व एक्टिव बनाना चाहते हैं तो ऐसे में आपको कुछ आसान तरीकों को अपनाना चाहिए, जिसके बारे में आज हम आपको इस लेख में बता रहे हैं-

लिफ्ट को कहें नो- आमतौर पर, लोग अपनी फिटनेस के लिए अलग से समय नहीं निकाल पाते हैं। लेकिन अगर आप खुद को अधिक हेल्दी व एक्टिव बनाना चाहते हैं तो इसका आसान तरीका है कि आप अपने लाइफस्टाइल में कुछ बदलाव करें। मसलन, अगर आपकी बिल्डिंग में लिफ्ट है तो आप उसका इस्तेमाल करने से बचें। जहां तक संभव हो, सीढ़ियों से ही जाएं। इससे आप अपेक्षाकृत अधिक चहलकदमी कर पाएंगे, जिससे आपकी सेहत सुधरेगी।

साइकिल को बनाएं व्हीकल- आज के समय में लोगों को कहीं पर भी जाना होता है तो बाइक, स्कूटी या कार का इस्तेमाल करना अधिक पसंद करते हैं। लेकिन अगर आपको आसपास कहीं पर जाना है तो इन व्हीकल्स की जगह आप साइकिल लेकर जाएं। साइकिल की मदद से आपका अच्छा वर्कआउट हो जाएगा और आपको पता भी नहीं चलेगा। ना तो फिटनेस के लिए अलग से समय निकालना पड़ेगा, वहीं दूसरी ओर साइकिल चलाने से आपको बहुत अधिक आनंद भी आएगा।

अगर हो सिटिंग जॉब- आज के समय में अधिकतर लोग सिटिंग जॉब करते हैं, जिसके कारण उनका फिजिकल वर्कआउट बिल्कुल भी नहीं हो पाता। इतना ही नहीं, एक ही जगह पर बैठे रहने से कई तरह की हेल्थ प्रॉब्लम्स भी शुरू हो जाती हैं।

इसलिए, अगर आप वर्कआउट नहीं भी कर पाते हैं तो भी हर आधे से एक घंटे में एक बार अपनी सीट से अवश्य उठें। साथ ही साथ कुर्सी पर बैठे-बैठे भी कुछ स्ट्रेचिंग अवश्य करें। यह आपकी बॉडी को बेहतर तरीके से काम करने में भी मदद करेगा और इससे आपकी नसें भी खुलेंगी।

सर्दियों में बढ़ जाती है साइनस की समस्या, इन घरेलू उपायों से तुरंत मिलेगी राहत

सर्दी-जुकाम होना एक आम बात है। लेकिन कई लोगों को हमेशा सर्दी-जुकाम रहता है जो साइनस या साइनोसाइटिस के कारण हो सकता है। साइनस एक ऐसी बीमारी है जिसमें साँस लेने में तकलीफ, आवाज में बदलाव, तेज़ सिरदर्द, बलगम आना जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं। सर्दियों में साइनस की समस्या बढ़ जाती है। कई लोग साइनस के लिए दवाइयां लेते हैं लेकिन इस बीमारी को घरेलू उपचारों की मदद से भी ठीक किया जा सकता है। आज के इस लेख में हम आपको ऐसे घरेलू नुस्खे बताने जा रहे हैं जो साइनस से छुटकारा दिलाने में आपकी मदद करेंगे-

क्या है साइनस- साइनस विशेष तरह का दर्द है, लेकिन इसे सामान्य दर्द की तरह समझा जाता है और इसका इलाज भी उसी तरह से किया जाता है। यही कारण है की यह बढ़ता चला जाता है। शुरुआत में साइनस का दर्द बिल्कुल माइग्रेन की तरह लगता है, लेकिन ध्यान से देखा जाये तो साइनस और माइग्रेन के दर्द अलग-अलग होते है। जब चेहरे पर स्थित साइनस कैविटीज से जुड़े टिशूज में सूजन आ जाती है तो इसे ही साइनस या साइनोसाइटिस कहते हैं। आम भाषा में कहें तो जिसमें आपकी श्वास नली में सूजन आ जाती है या नाक की हड्डी बढ़ जाती है और सांस लेने में दिक्कत होती है। साइनस का दर्द चेहरे के अगले हिस्से मसलन गले, नाक, आंखों के आसपास के हिस्से और गालों में होता है। इससे सिर भारी-भारी सा लगता है और बोलते समय आवाज भी

साफ नहीं निकलती।

साइनस के कारण-साइनस का मुख्य कारण साइनस के अंदर की चिपचिपी झिल्ली में सूजन आ जाना है। साइनस की झिल्ली में सूजन की कई सारी वजहें हैं, मसलन नाक की हड्डी का टेढ़ा होना या फिर नाक की हड्डी बढ़ जाना, बढ़ता हुआ प्रदूषण, धूल मिट्टी से एलर्जी, दांतों में दर्द, दूषित पानी का सेवन आदि, जो साइनस की वजह बन जाते हैं।

मास्क पहनकर बाहर निकलें- ठंड के मौसम में बाहर निकलते समय मास्क पहनें और अपना चेहरा ढँक लें क्योंकि धूल, प्रदूषक और एलर्जी साइनस की समस्या को बढ़ा सकते हैं।

हाथों को धोएं- खाने से पहले और बाहर से आने के बाद अपने हाथों को अच्छी तरह धोएं ताकि मुंह में कीटाणु ना घुसें और सर्दी-जुकाम ना हो।

स्टीम- साइनस के दर्द के इलाज का सबसे आसान व प्रभावी घरेलू उपाय है स्टीम। स्टीम नाक के मार्ग को खोलने में मदद करती है। साथ ही इससे साइनस प्रेशर भी कम होता है। स्टीम लेने के लिए पहले आप एक बर्तन में पानी डालकर उसे उबालें और अब उस बर्तन के उपर अपना मुंह रखें। इसके बाद आप अपने सिर के उपर तौलिया रखें। साथ ही यह भी सुनिश्चित करें कि भाप आपके नाक के रास्ते भीतर जाए।

नाक का स्प्रे- नाक का स्प्रे साइनस के इलाज के लिए बेहद प्रभावी होता है। इसके लिए आप पानी में थोड़ा नमक और बेकिंग पाउडर मिलाएं और एक स्प्रे बोतल में भरकर नाक में डालें। आप इस नाक के स्प्रे का इस्तेमाल दिन में दो से तीन बार कर सकते हैं।

संतुलित आहार- साइनस की समस्या से बचने के लिए ताजे फल, सब्जियों और साबुत अनाज से भरपूर संतुलित आहार लें। प्रोसेस्ड, जंक और तैलीय खाद्य पदार्थों से बचें क्योंकि यह साइनस की समस्या पैदा कर सकते हैं। इसके साथ ही शराब और धूम्रपान से दूरी बनाकर रखें।

गर्म तरल पदार्थ का सेवन- अगर आप साइनस से बचना चाहते हैं तो खुद को हाइडेटेड रखें। इसके लिए आप गुनगुने पानी, कॉफी, चाय या फलों के रस का सेवन करें। गर्म तरल पदार्थों का सेवन करने से नाक आसानी से खुल जाती है।

वार्म कंप्रेस- वार्म कंप्रेस साइनस के दर्द व प्रेशर से राहत पाने का एक प्रभावी उपाय है। इसके लिए आप एक तौलिए को गर्म पानी में डिप करें। अब इसे हल्का सा निचोड़कर अपने नाक व चीक्स के उपर रखें। इससे आपको काफी राहत महसूस होगी।

दालचीनी- एक चम्मच दालचीनी पाउडर और चंदन पाउडर पानी में मिला लें। इस पेस्ट को अपने माथे पर लगाएं। ऐसा करने से आपको बंद नाक और सिरदर्द से जल्द राहत मिलेगी।

अभिभाषक परिषद बूंदी ने दुष्कर्म के आरोपियों की पैरवी नहीं करने का लिया निर्णय

अतुल्य संसार

बूंदी (शिवकुमार शर्मा)। अभिभाषक परिषद बूंदी के अध्यक्ष

चंद्रशेखर शर्मा ने बताया कि बसोली पुलिस थाना के ग्राम काला कुआं में आदिवासी बालिका के साथ सामूहिक दुष्कर्म व हत्या के आरोपियों की अभिभाषक परिषद बूंदी का कोई भी सदस्य पैरवी नहीं करेगा, शर्मा ने बताया कि बूंदी अभिभाषक परिषद इस मामले में पुलिस अधीक्षक जय यादव व उनकी पूरी टीम की प्रशंसा करता है। जिन्होंने कम समय में आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने इस मुकदमे को ऑफिसर स्कीम में लेते हुए जल्द हत्यारों को सजा दिलाने की मांग की है।

जिला कलेक्टर ने जिलेवासियों को दी नववर्ष की शुभकामनाएं

अतुल्य संसार

हिण्डोली, बूंदी (धर्मेन्द्र सुवालका)। जिला कलेक्टर रेणु

जयपाल ने नववर्ष की शुभकामनाएं दी है उन्होंने कहा कि नव वर्ष सभी के लिए मंगलमय रहे बूंदी वासियों के लिए अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि कोविड-19 प्रथम डोज के टीकाकरण में सबकी भागीदारी से हमने प्रदेश में पहला स्थान पाया है इसी तरह 15 से 18 वर्ष आयु वर्ग के बालकों को भी सुरक्षित भविष्य प्रदान करें बूंदी को सुरक्षित रखें ।

रणजी ट्राफी टूर्नामेंट को लेकर सौरव गांगुली ने राज्य संघों को लिखा एक पत्र

बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट बोर्ड) अध्यक्ष सौरव गांगुली ने राज्य इकाईयों को आश्वस्त किया कि बोर्ड ''कोविड-19 के बढ़ने से उत्पन्न हुई परिस्थितियों के नियंत्रण में आने के बाद घरेलू सत्र को दोबारा शुरू करने के लिये सबकुछ करेगा।'' देश भर में कोविड-19 के बढ़ते मामलों के कारण बीसीसीआई को मंगलवार को रणजी ट्राफी सहित कुछ बड़े टूर्नामेंट को स्थगित करने के लिये बाध्य होना पड़ा। रणजी ट्राफी इस महीने के अंत में शुरू होनी थी। गांगुली ने राज्य संघों को लिखे एक पत्र में कहा, ''आप इस बात से वाकिफ ही हो कि हमें कोविड-19 हालात के खराब होने के कारण मौजूदा घरेलू सत्र को रोकना पड़ा।'' रणजी ट्राफी और सीके नायुडू ट्राफी इस महीने शुरू होनी थी जबकि सीनियर महिला टी20 लीग फरवरी में आयोजित होती।

गांगुली ने सभी राज्य इकाईयों के अध्यक्षों और सचिवों को लिखे मेल में कहा, ''कोविड-19 मामले तेजी से बढ़ रहे हैं और कई टीमों में कई पॉजिटिव मामले सामने आये। इससे खिलाड़ियों, अधिकारियों और टूर्नामेंट को चलाने से संबंधित अन्य लोगों के स्वास्थ्य के लिये खतरा पैदा हो गया।'' पीटीआई के पास गांगुली द्वारा लिखा ईमेल है। गांगुली ने कहा कि घरेलू सत्र को दोबारा शुरू करने के लिये बोर्ड सबकुछ करेगा। उन्होंने कहा, ''बीसीसीआई आश्वस्त करना चाहेगा कि जैसे ही कोविड-19 हालात काबू में आते हैं, बोर्ड घरेलू सत्र को फिर से शुरू करने के लिये सबकुछ करेगा।'' गांगुली ने कहा, ''हम इस सत्र के बचे हुए टूर्नामेंट आयोजित करने के लिये प्रतिबद्ध हैं। बोर्ड संशोधित योजना के साथ जल्द ही आपके पास वापस आयेगा।'' उन्होंने कहा, ''मैं आपके सहयोग और परिस्थितियों को समझने के लिये आपका शुक्रगुजार हूं। अपना ध्यान रखिये और सुरक्षित व स्वस्थ रहिये।'' बंगाल टीम के सात सदस्य और भारतीय आल राउंडर शिवम दुबे के साथ मुंबई टीम के वीडियो विश्लेषक रणजी ट्राफी के शुरू होने से पहले कोविड-19 पॉजिटिव पाये गये थे जिसे 13 जनवरी से शुरू होना था। महामारी के कारण 2020-2021 का सत्र भी आयोजित नहीं हो सका था।

किसानों को एक और गिफ्ट दे सकती है मोदी सरकार, वार्षिक कृषि कर्ज में कर सकती है बढ़ोतरी

मोदी सरकार आने वाले बजट में किसानों को एक और तोहफा दे सकती है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, 1 फरवरी को पेश होने वाले 2022 -23 के बजट में कृषि ऋण को बढ़ाकर लगभग 18लाख करोड़ रुपये रुपये कर सकती है। सरकार के इस कदम से कृषि क्षेत्र को और बढ़ावा मिलेगा। सूत्रों से मिल रही जानकारी के मुताबिक सरकार साल दर साल कृषि क्षेत्र के लिए ऋण लक्ष्य को बढ़ा रही है। चालू वित्त वर्ष की बात करें तो, सरकार का कृषि ऋण लक्ष्य 16.5 लाख करोड़ रुपये है। 2022-23 के बजट में सरकार इस कृषि ऋण लक्ष्य को बढ़ाकर 18से 18.5 लाख कर सकती है। सूत्र बताते हैं कि महीने के आखिरी हफ्ते में बजट को अंतिम रूप देते वक्त इसे भी तय किया जाएगा।

सरकार वार्षिक कृषि कर्ज तय करती है। बात अगर पिछले कुछ सालों की करें तो यह कृषि ऋण लगातार बढ़ा है। 2017-18में कृषि क्षेत्र के लिए दिए जाने वाला कर्ज 10 लाख करोड़ तय किया गया था लेकिन किसानों को 11.68 लाख करोड़ रुपये का कर्ज दिया गया। इसी तरह वित्त वर्ष 2016-17 में भी 9 लाख करोड़ रुपये कृषि ऋण तय किया गया था। लेकिन इस साल भी किसानों को उससे ज्यादा 10.66 लाख करोड़ रुपये का कर्ज दिया गया।

बढ़िया कृषि उत्पाद हासिल करने के लिए कर्ज को एक अहम निवेश माना जाता है। सूत्रों से बताया कि संस्थागत कर्ज किसानों को गैर संस्थागत स्रोतों से अलग करने में भी सहायता करेगा। गैर संस्थागत स्रोतों में किसान ज्यादा से ज्यादा ब्याज पर भी कर्ज लेने के लिए मजबूर होता है। वैसे तो कृषि कर्ज पर 9 प्रतिशत ब्याज लगता है। लेकिन सरकार अल्पकालिक फसल ऋण देने और कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सस्ती दर पर ब्याज देती है। इसके लिए वह ब्याज सबवेंशन भी देती है।

सरकार द्वारा 3 लाख रुपये तक के अल्पकालिक कर्ज को 7 प्रतिशत की वार्षिक ब्याज दर पर दिया जाता है। सरकार इस ब्याज पर भी दो प्रतिशत की सब्सिडी देती है। किसानों को समय पर कर्ज लौटाने के लिए इस ब्याज पर 3 प्रतिशत की छूट और दी जाती है। जिसके बाद यह ब्याज दर महज 4 प्रतिशत रह जाती है। ऐसे में अगर सरकार कृषि कर्ज के लक्ष्य को और बढ़ाती है तो इससे किसानों को लाभ होगा। किसान ज्यादा से ज्यादा कर्ज ले पाएंगे। आरबीआई ने भी छोटे और सीमांत किसानों के कर्ज को बढ़ावा देने के लिए बिना कुछ गिरवी रखे मिलने वाले कृषि कर्ज की सीमा का 1 लाख रुपये से बढ़कर 1.6 लाख रुपये करने का फैसला किया है।

बिना पिन और मोबाइल नेटवर्क के 200 तक का कर पाएंगे E-Pay, रिजर्व बैंक ने जारी की सुविधा

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने अपने बयान में कहा कि ऑफलाइन ट्राजैक्शन दुकानदार, खरीदार और कार्ड से किया जा सकता है। इसके साथ ही ऐसे ट्राजैक्शन में अतिरिक्त सत्यापन कारक (AFA) की भी जरूरत नहीं होगी। ऑफलाइन भुगतान के कारण ग्राहकों को sms अलर्ट बी कुछ देर बाद मिलेगा।

अब आप बिना पिन और मोबाइल नेटवर्क के 200 रुपये तक का ई-पे कर पाएंगे। बता दें कि, भारतीय रिजर्व बैंक ने इंटरनेट या मोबाइल कनेक्टिविटी के बिना 200 रुपये तक के छोटे टिकट भुगतान करने की सुविधा दी है। आप भुगतान कार्ड, वॉलेट, और मोबाइल फोन सहित किसी भी सुरक्षित मिडियम के माध्यम से कर सकते है। RBI ने यह डिजीटल ट्राजेक्शन को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाया है। बता दें कि, गावों और कस्बों में भी डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा मिले इसके लिए RBI ने प्रति ट्राजैक्शन 200 रुपये तक का ऑफलाइन भुगतान की इजाजत दी है। इसकी कुल सीमा 2000 रुपये तक होगी।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने अपने बयान में कहा कि ऑफलाइन ट्राजैक्शन दुकानदार, खरीदार और कार्ड से किया जा सकता है। इसके साथ ही ऐसे ट्राजैक्शन में अतिरिक्त सत्यापन कारक (AFA) की भी जरूरत नहीं होगी। ऑफलाइन भुगतान के कारण ग्राहकों को sms अलर्ट बी कुछ देर बाद मिलेगा। केन्द्रीय बैंक ने कहा है कि, देश के विभिन्न हिस्सों में सितंबर 2020 से जून 2021 तक पायलट आधार पर ऑफलाइन लेनदेन किया गया था। इसी को देखते हुए अब यह दोबारा शुरू किया जा रहा है।

दादा की सेवानिवृत्ति पर घोड़ी पर बैठकर झुमा नन्हां सा पोता

अतुल्य संसार

उदयपुरवाटी/जाखल (सुमेर सिंह राव)। जब दादा के रिटायरमेंट पर उनका नन्हां सा मासुम एक साल का पोता खुशी के इजहार मे घोडी पर बैठकर झुमने लगे तो लोग दॉतो तले अंगुली दबाने पर मजबूर हो गए।

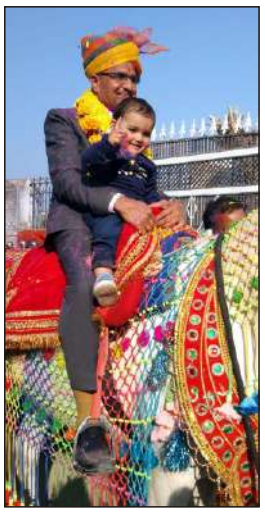

जी हॉ ऐसा ही एक नजारा जाखल गांव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में एक शिक्षक के रिटायरमेंट सम्मान समारोह में देखने को मिला। संस्था मे सेवारत पुस्तकालय अध्यक्ष विश्वनाथ सोनी की सेवानिवृत्ति पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया .समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व प्रधानाचार्य जयसिंह सिहाग थे. अध्यक्षता गंगाराम गोरा शीथल ने की तथा विशिष्ट अतिथि देवकरण सिंह. नवरत्न सिंह, संतकुमार मीणा, सुरेश कुमार, विकास कुमार थे। अतिथियों ने अपने ही गॉव की स्कुल में लगातार साढे सताईस साल की पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में बेदाग सेवा निभाने वाले पुस्तकालय अध्यक्ष विश्वनाथ सोनी की भुरभुरी प्रशंसा की तथा कहा कि ये संयोग ही है कि जिस स्कूल में वे पढे थे। उसी स्कूल में बतौर पुस्तकालय अध्यक्ष के रुप मे साढे सताईस साल के सेवाकाल के बाद उसी स्कूल से सेवानिवृत्त होना एक गर्व की बात है। यही नहीं एक ओर संयोग देखा गया कि जिस दिन सेवानिवृत्त समारोह हुआ उसी दिन इनका जन्म दिवस था. प्रधानाचार्य सुरेंद्र पारीक ने कहा कि संस्था के हर कार्य में अपनी अहम भूमिका अदा करने वाले ऐसे कर्म योद्धा शिक्षक पर आज संस्था का संपूर्ण स्टाफ व विद्यार्थी वर्ग गौरवान्वित है। जिन्होंने हमेशा आगे होकर संस्था के कार्य को बेखुबी निभाने का कार्य किया। शिक्षक विश्वनाथ सोनी ने संस्था को एक अलमारी भेंट की. सेवानिवृत्ति सम्मान समारोह के दौरान शिक्षक सुनील झाझरिया, नरेश कुमार, रामस्वरूप सैनी, अशोक कुमार, श्रीमती प्रतीका, पिंकी, मुन्नी देवी, संजीव कुमार, शीशराम सहित अनेक शिक्षक गण परिजन व रिश्तेदार गण मौजूद थे, सेवानिवृत्ति पर विश्वनाथ सोनी का एक वर्षीय मासुम पोता भुविक सोनी भी अपने दादा के साथ घोडी पर बैठकर डीजे की धुन पर नाचते हुए घर तक पहुंचा तो लोगों ने दॉतो तले अंगुली दबाने लगे। ऐसा नजारा आपने न तो कभी सुना है और न ही देखा होगा। जब अपने शिक्षक दादा की सेवानिवृत्ति पर उनका एक वर्षीय पोता भी डीजे की धुन पर घोड़ी पर बैठ कर नाचने लगे। अंत मे सेवानिवृत्त पुस्तकालय अध्यक्ष विश्वनाथ सोनी ने बच्चों को मिठाई बॉटकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। संचालन शिक्षक सुनील कुमार ने किया।

दलेलपुरा के संदीप ताखर बने डॉक्टर, किया परिवार का नाम रोशन

अतुल्य संसार

दलेलपुरा (सुमेर सिंह राव)। समाजसेवी कैप्टन राम निवास ताखर

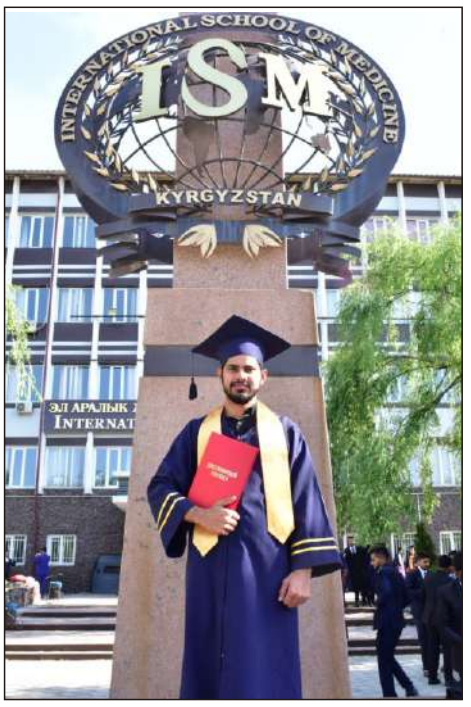

के भतीजे संदीप ताखर सुपुत्र श्री रोहिताश्व ताखर ने बिस्केक (रूस) से एमबीबीएस (MBBS) किया, और यहाँ नेशनल मेडिकल कमीशन (MNC) द्वारा 12 दिसम्बर को आयोजित परीक्षा में प्रथम प्रयास में ही 300 में से 195 अंक प्राप्त कर एमबीबीएस (MBBS) की डिग्री हासिल कर डॉक्टर बने।

उल्लेखनीय है कि संदीप अपने परिवार में पहले डॉक्टर बने हैं। संदीप ताखर के डॉक्टर बनने से परिवार व साथियों मे खुशी का माहौल है।

संदीप की इस उपलब्धि पर परिवार जनों, रिश्तेदारों व शुभचिंतकों द्वारा संदीप को शुभकामनाएं व बधाई दी गई।

डॉक्टर संदीप ने कहा कि मेरी इस सफलता में मेरे माता पिता, परिवार जन व साथियों तथा चाचाजी कैप्टन राम निवास ताखर का अहम योगदान है।

भावी जीवन की प्रार्थमिकता बाबत उन्होंने बताया जीवन मे मरीजों की देखभाल पूर्ण लग्न व निष्ठा से करने का प्रयास करूंगा।

बिकिनी में कातिलाना पोज देकर अभिनेत्री मौनी रॉय ने उड़ाए फैंस के होश

कलर टीवी के मशहूर शो नागिन से घर घर पहचान बनाने वाली अभिनेत्री मौनी रॉय अपनी बोल्डनेस से सुर्खियों में बनी रहती हैं। हाल ही में अभिनेत्री मौनी ने अपनी कुछ हॉट तस्वीरें सोशल मीडिया पर पोस्ट की। तस्वीरें पोस्ट होते ही सोशल मीडिया पर आग की तरह फ़ैल गई हैं। अभिनेत्री की बोल्डनेस देखकर लोगों की रातों की नींद उड़ गई हैं।

अभिनेत्री मौनी रॉय इन दिनों अपनी क्लोज फ्रेंड्स के साथ हॉलिडे एन्जॉय कर रही हैं। वहां से उन्होंने अपनी कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया पर शेयर की। तस्वीरों में अभिनेत्री ने सी ग्रीन कलर का सेक्सी बिकिनी टॉप और साइड स्लिट स्कर्ट पहनी हुई है। मौनी रॉय ने मैचिंग फ्लोई केप जैकेट के साथ अपने बिकिनी सेट को कम्पलीट किया है।

अभिनेत्री बिकिनी पहनकर बेहद ही कातिलाना पोज दे रही हैं। उनकी इन बोल्ड तस्वीरों पर अब तक लगभग पांच लाख लोग अपना दिल हार गए हैं। मौनी के फैंस और फॉलोवर्स दिल खोलकर तस्वीरों पर कमेंट करने में लगे हुए हैं।

इससे पहले भी उन्होंने अपनी कई बिकिनी फोटोज सोशल मीडिया पर शेयर की हुईं हैं। अभिनेत्री अक्सर अपने स्टाइलिश बिकिनी लुक्स की वजह से सुर्खियों में बनी रहती है। मौनी रॉय लम्बे समय से दुबई के बैंकर और बिजनसमैन सूरज नाम्बियार के साथ रिलेशनशिप में हैं और जल्द ही शादी के बंधन में बंधेगी।

जल्द शादी के बंधन में बढ़ेंगे शिबानी दांडेकर और फरहान अख्तर

बॉलीवुड के कई फेमस कपल ने पिछले साल अपने रिश्ते में एक कदम आगे बढ़ाते हुए शादी के बंधन में बंधे। इस साल भी कई कपल्स एक दूसरे से शादी करने के लिए तैयार बैठे हैं। इसी कड़ी में अभिनेता फरहान अख्तर और अभिनेत्री शिबानी दांडेकर को लेकर एक बड़ी खबर सामने आई है। खबर के मुताबिक बी टाउन का यह कूल कपल जल्द ही शादी करने वाला है।

बॉलीवुड लाइफ वेबसाइट के इंडस्ट्री के एक करीबी सूत्र ने दोनों की शादी को लेकर बड़ा खुलासा किया है। सूत्र की मानें तो फरहान और शिबानी मार्च 2022 में मुंबई में एक लेविश वेडिंग करने की योजना बना रहे थे। पर कोरोना के बढ़ते मामलों की वजह से और बॉलीवुड के कई सेलेब्स के कोरोना पॉजिटिव होने के बाद दोनों ने दोस्तों और परिवार के बीच शादी करने का फैसला किया है। फरहान और शिबानी एक साथ रह रहे हैं और वह कोरोना की वजह से अपनी शादी में देरी नहीं करना चाहते हैं, इसलिए दोनों ने इसे इंटीमेट रखने के बारे में सोचा। वेडिंग वेन्यू के बारे में बताते हुए बॉलीवुडलाइफ के सूत्र ने कहा कि फरहान और शिबानी ने वेडिंग वेन्यू के लिए एक 5 स्टार होटल बुक किया है और लगभग सब कुछ फाइनल कर लिया है। दोनों ने अपने बड़े दिन के लिए सब्यसाची के पेस्टल रंगों के आउटफिट (जैसे कैटरीना कैफ और विक्की कौशल) को चुना है।

अभिनेता फरहान अख्तर और अभिनेत्री शिबानी दांडेकर करीब तीन साल से एक दूसरे को डेट कर रहे हैं। शिबानी ने अपनी पीठ पर फरहान के नाम का टैटू भी बनवाया हुआ है। शिबानी दांडेकर के साथ रिलेशनशिप में आने से पहले फरहान अख्तर ने हेयर स्टाइलिस्ट अधुना भबानी से शादी की थी, जिनसे उनकी दो बेटियां हैं।

स्थानीय इतिहास से बेपरवाही न हो

पीलीभीत के बांसुरी महोत्सव में आये बच्चे, नौकरीपेशा लोग व स्थानीय व्यापारी इस बात से बेखबर थे कि कभी सुभाषचंद्र बोस को देश से बाहर ले जाने में मददगार भगतराम तलवार बीस साल तक उनके ही शहर में रहे थे. उन्हें यह भी नहीं पता था कि 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उनके शहर के आयुर्वेदिक कॉलेज का एक छात्र दामोदर दा शहीद हो गया था.

पीलीभीत की बांसुरी मशहूर करनेवालों की रुचि इसमें नहीं थी कि यहां एक प्राचीन जामा मस्जिद, उसके पीछे गौरीशंकर मंदिर या छठी पादशाही गुरुद्वारा भी है.

एटा का सरकारी स्कूल 134 साल पुराना हो गया. उसने कई अफसर, नेता, अभिनेता आदि बनाये, लेकिन जैसे ही नया भवन बना, पुरानी इमारत खंडहर हो गयी. शाहजहांपुर में 1857 के महान लड़ाके मौलवी साहब की कब्र हो या बिस्मिल का मकान, गुमनामी में हैं. शायद देश के हर कस्बे-शहर की यही त्रासदी है. विडंबना है कि जब तब इतिहास को नये तरीके से लिखने का विचार आता है, तो सांप्रदायिक विवादों में घिर जाता है.

अपनी स्थानीयता, अपने शहर और पूर्वजों पर गर्व करनेवाला समाज ही अपने परिवेश और सरकारी या निजी संपत्ति से जुड़ाव महसूस करता है और उसे सहेजने के प्रति संवेदनशील बनता है. यह भी समझना होगा कि अब वह पीढ़ी गिनती की रह गयी है, जिसने आजादी के संघर्ष को या तो देखा या उसके सहभागी रहे. यह देश का कर्तव्य है कि उस लड़ाई से जुड़े स्थान, दस्तावेज, घटनाओं को उनके मूल स्वरूप में सहेजा जाए, वरना इतिहास वही बचेगा, जो राजनीतिक उद्देश्य से गढ़ा जा रहा है.

इतिहास के तथ्यों पर एकमत न होना स्वाभाविक है. इतिहास को नये तरीके से लिखने के लिए इतिहासकार तथ्यों की व्याख्या नये तरीकों से करते हैं, जो अतीत के बारे में हमारी धारणाओं को समृद्ध करते हों. खासकर आजादी का इतिहास लिखने के लिए जरूरी है कि उसकी प्रमुख घटनाओं से जुड़ी इमारतों-स्थानों को सुरक्षित रखा जाए.

आगरा या कानपुर में सरदार भगत सिंह के ठहरने के स्थान को अब नहीं तलाशा जा सकता, झांसी में आजाद सहित कई क्रांतिकारियों के स्थान का कोई अता-पता नहीं, जलियांवाला बाग में गोलियों के निशान दमकते म्यूरल से ढक दिये गये. दस्तावेजों के रखरखाव में भी हम गंभीर नहीं रहे. तभी इतिहास को किंवदंती या अफवाह के घालमेल से पेश करने में कई जिम्मेदार व नामी लोग भी संकोच नहीं करते.

स्थानीय इतिहास को सहेजना व उसका दस्तावेजीकरण असल में देश के इतिहास को फिर से लिखने जैसा है. इतिहास का पुनर्लेखन ऐतिहासिक ज्ञान की वृद्धि का स्वाभाविक पक्ष है, तो हमें सतर्क भी रहना होगा कि तर्कों के मूल में छिपी बातों की कल्पना करना या पूर्वानुमान लगाना, उठाये गये प्रश्नों, ज्ञान को प्रामाणिकता प्रदान करने की प्रक्रिया, विस्तार की गयी कहानी के स्वरूप आदि किस तरह से प्रासंगिक व व्यापक इतिहास से जुड़ें.

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दिनों में भारतीय इतिहास को ब्रितानी इतिहासकार सेना में बगावत, किसानों के विद्रोह और शहरी क्षेत्रों में उपनिवेश विरोधी आंदोलनों के नजरिये से लिखने लगे. उसी समय संप्रदाय आधारित लेखन भी शुरू हो चुका था. एक धारा राष्ट्रवादी लेखन की भी थी, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसे लेखकों के मूलभूत सामाजिक-आर्थिक तथ्यों का आधार शासन-प्रदत्त आंकड़े ही रहे. इस आपाधापी में जो अपना इतिहास लिख गया, वह किताबों मे रह गया, लेकिन जो इतिहास कई बड़ी घटनाओं का साक्षी रहा, वह लापरवाही का शिकार हो गया.

स्थानीय समाज जानता ही नहीं था कि उसे इन यादों को कैसे समेटना है तथा बड़े इतिहासकार वहां तक पहुंचना ही नहीं चाहते थे. इसका लाभ उठा कर स्कूली व्यवस्था के बाहर बाजार में स्थानीय व राष्ट्रीय इतिहास पर प्रकाशित लोकप्रिय

पुस्तिकाओं ने ऐतिहासिक ज्ञान को दूसरे तरीके से प्रचारित किया. बगैर किसी तथ्य, प्रमाण या संदर्भ के लिखी गयीं इन पुस्तकों के पाठक बड़ी संख्या में थे, क्योंकि ये कम कीमत पर मिल जाती थीं.

बहुत बाद में पता चला कि ऐसी पुस्तकों ने लोकप्रिय ऐतिहासिक संवेदनशीलता को काफी चोट पहुंचायी. अकेले क्रांतिकारी ही नहीं, लेखक-पत्रकार, लोक कलाकार, कलाओं आदि के प्रति भी बेपरवाही ने इलेक्ट्रॉनिक गजट व गूगल पर निर्भर पीढ़ी को अपने आसपास बिखरे ज्ञान, सूचना और संवेदना के प्रति लापरवाह बना दिया है. पीलीभीत में ही बांसुरी महोत्सव में स्थानीय इतिहास व सेनानियों की एक प्रदर्शनी होती, तो लगता कि महोत्सव महज बाजार नहीं है.

ऐसे में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बच्चों में इतिहास के प्रति अन्वेषी दृष्टि विकसित करने का कोई उपक्रम शुरू हो और हर जिले के कम से कम एक विद्यालय में दस्तावेजीकरण का संग्रहालय हो. मुफ्त ब्लॉग पर ऐसी सामग्री डिजिटल रूप से प्रस्तुत कर दी जाए, तो दूरस्थ इलाकों के लोग अपने स्थानीय इतिहास को उससे संबद्ध कर अपने इतिहास-बोध को विस्तार दे सकते हैं.

आजादी की लड़ाई में अपना जीवन खपा देनेवाले गुमनाम लोगों से जुड़े स्थानों को ऐतिहासिक महत्व का पर्यटन स्थल बना सकते हैं. वैसे कक्षा आठ तक जिला स्तर के भूगोल, इतिहास और साहित्य की पुस्तकें अनिवार्य करना चाहिए तथा उनके लिए सामग्री का संकलन स्थानीय स्तर पर ही हो. हमारा वर्तमान अपने अतीत की नींव पर ही खड़ा है और उसी पर भविष्य की इमारत बुलंद होती है. समय आ गया है कि पुरानी नींव को सुरक्षित, संरक्षित व मजबूत बनाया जाए.

हादसों से सबक लेना जरूरी

नये साल ने पहले ही दिन अनेक हादसों का दर्द दे दिया है. फिर वही पुराने कर्मकांड हो रहे हैं, जो हर हादसे के बाद दोहराये जाते हैं, मसलन- शोक जताने, जांच कराने, मुआवजे के एलान करने और आरोप-प्रत्यारोप जैसे कर्मकांड. उन तथ्यों को भी झुठलाया जा रहा है, जो दोषियों की ओर संकेत कर सकती हैं. आखिर कौन कह सकता है कि जब तक हम ऐसे हादसों से सबक लेकर उनके कारणों को दूर नहीं करेंगे, इनकी पुनरावृत्ति रोक लेंगे ?

सबसे बड़ा हादसा दरअसल यही है कि सबक लेने के इस काम को गैरजरूरी मान लिया गया है. जम्मू के वैष्णो देवी मंदिर में हुई भगदड़ के सिलसिले में, जिसमें दर्जन भर लोगों की जान चली गयी और कई अन्य जिंदगी और मौत के बीच झूल में रहे हैं, इसे समझना चाहें, तो तीर्थस्थलों पर भीड़ प्रबंधन की नाकामी के कारण हुईं पिछली भगदड़ों के ब्यौरे चीख-चीखकर कह रहे हैं कि उनमें से किसी के दिये सबक भी अमल में लाये गये होते, तो ऐसी भगदड़ों में जन हानि की पुनरावृत्ति नहीं होती. मंदिरों और अन्य सार्वजनिक जगहों में ऐसे हादसों की एक बड़ी सूची हमारे सामने है. फिर भी, जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक भगदड़ का कारण बताते हुए यह तो कहते हैं कि मंदिर के गेट नंबर तीन पर कुछ युवकों में तीखी बहस के बाद धक्का-मुक्की हुई, तो लोग डर कर भागने लगे. इस कारण भगदड़ हुई और जानें गयीं.

राज्य के सामान्य प्रशासन विभाग के प्रधान सचिव मनोज कुमार द्विवेदी बताते हैं कि उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने भगदड़ की जांच के लिए प्रधान सचिव (गृह) की अध्यक्षता में तीन

सदस्यीय समिति गठित की है, जिसके अन्य दो सदस्य जम्मू संभागीय आयुक्त राघव लंगर और जम्मू के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक मुकेश सिंह हैं. इस समिति को एक सप्ताह के भीतर अपनी रिपोर्ट सौंपने के लिए कहा गया है.

लेकिन, इनमें से कोई भगदड़ पीड़ितों के इन आरोपों पर कुछ बोलने को तैयार नहीं है कि वास्तव में मंदिर बोर्ड के कर्मियों द्वारा उगाही के चक्कर में पैसे देनेवालों को पहले दर्शन करवाने के चलते अव्यवस्था पैदा हुई, जो बाद में भगदड़ में बदल गयी. आरोप लगाने वाले अपने कथन की सच्चाई को लेकर इतने आश्वस्त थे कि उन्होंने सड़क पर उतरकर पुलिस की लाठियां झेलना भी गवारा कर लिया.

उड़ान योजना शुरू करने वाले मुख्यमंत्री अशोक गहलोत देश- प्रदेश के हीरो : ममता भूपेश

अतुल्य संसार

जयपुर। महिला एवं बाल विकास तथा बाल अधिकारिता मंत्री श्रीमती ममता भूपेश ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत देश-प्रदेश के हीरो हैं, जिनके के विज़न अनुसार प्रदेश की किशोरियों और महिलाओं को नि:शुल्क सेनेटरी नेपकिन वितरण करने हेतु उड़ान योजना आरम्भ की गई है।

श्रीमती भूपेश ने आयोजित कार्यक्रम में बताया कि प्रदेश के मुखिया मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की यह चिंता थी कि स्वस्थ राजस्थान व निरोगी राजस्थान की संकल्पना में महिलाओं को कैसे जोड़ा जाए। इस पर सर्वे किया गया ओर पाया गया कि महिलाओं में सबसे ज्यादा बीमारियां माहवारी में स्वच्छता संबंधी होती हैं। इसके आधार पर ही प्रदेश में आई एम शक्ति उड़ान योजना को आरम्भ किया गया है। उन्होंने कहा कि अन्य प्रदेश की सरकारों को भी किशोरियों और महिलाओं के हित में इस योजना को अपनाना चाहिए।

महिला एवं बाल विकास मंत्री ने मंगलवार को गांधी नगर स्थित राजकीय शिशु गृह एवं बालिका गृह का निरीक्षण किया। उन्होंने संस्था में आवासित शिशु बालक/बालिका एंव बालिका गृह की बालिकाओं के साथ एक घंटे से ज्यादा समय व्यतीत किया एवं विभाग द्वारा देय सुविधाओं की जानकारी ली। मंत्री ममता भूपेश द्वारा आवासित बच्चों को नववर्ष के उपलक्ष्य मंव आशीर्वाद दिया और चॉकलेट वितरित की। श्रीमती भूपेश ने सीएसआर फण्ड के तहत दी गई एम्बूलेंस को हरी झण्डी दिखा कर रवाना किया।

इस अवसर पर समित शर्मा, शासन सचिव, बाल अधिकारिता विभाग, श्रीमती अनुप्रेरणा सिंह कुंतल, आयुक्त एवं संयुक्त शासन सचिव बाल अधिकारिता विभाग, बाल कल्याण समिति सदस्यगण एवं विभागीय अधिकारी मौजूद थे।

राज्य स्तरीय रोवर रेंजर मूट मीट झुंझुनु मे कोटा के सीनियर रोवरमेट सौरभ सोनी को किया सम्मानित

अतुल्य संसार

कोटा (शिवकुमार शर्मा)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड द्वारा आयोजित 5 दिवसीय राज्य स्तरीय रोवर रेंजर मूट मीट शिविर का आयोजन कर्नल जेपी जानु राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय झुंझुनु मे आयोजित किया गया। जिसमें राजकीय कला महाविध्यालय व राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड कोटा के सीनियर रोवरमेट सौरभ सोनी के नेत्रत्व मे कोटा के 8 रोवर एवं 8 रेंजर सम्मिलित हुवे रोवर लीडर एल सी अग्रवाल ने बताया की 5 दिवसीय शिविर मे राजस्थान के 32 जिलो के प्रतिभागियो ने भाग लिया एवं कई साहसिक गतिविधिया करवाई गयी। जिसमें कोटा जिले के सीनियर रोवरमेट सौरभ सोनी को प्रमाण पत्र व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। सभी रोवर रेंजर के कोटा लोटने पर सीओ स्काउट प्रदीप चित्तौडा सहायक राज्य संघठन आयुक्त दिलीप माथुर सीओ गाइड प्रीति कुमारी आदि ने रोवर रेंजर को बधाई दी एवं उनके उज्ज्वल भविषय की कामना की राजकीय कला महाविध्यालय के प्राचार्य डॉ संजय भार्गव ने बताया की सौरभ सोनी ने कई बार अंतराष्ट्रीय स्तर पर कोटा का प्रतिनिधित्व कर म्हाविध्यालय को अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई है।

बूंदी सुरक्षित रहे, इसलिए गली गली घूमी प्रशासन- पुलिस की टीम

कलक्टर के नेतृत्व में बाजार मे बांटे मास्क

अतुल्य संसार

बूंदी (शिवकुमार शर्मा)। कोरोना की तीसरी लहर के प्रति आगाह करने तथा इससे बचाव के उपाय अपनाने का संदेश देने के लिए जिला कलेक्टर रेणु जयपाल की पहल पर शहर के मुख्य बाजारों में मास्क वितरण रैली निकाली गई।

कलक्टर रेणु जयपाल, अतिरिक्त कलेक्टर एयू खान, सीईओ जिला परिषद मुरलीधर प्रतिहार, उपखंड अधिकारी ललित गोयल,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक किशोरी लाल सहित प्रशासन एवं पुलिस की टीम ने शहर के मुख्य बाजारों में पैदल घूम कर मास्क बांटे। मास्क नहीं लगाने वालों को मास्क पहनाए और लगाए रखने की सलाह दी रैली कलक्ट्रेट से आरंभ हुई और बाजार के मुख्य मार्गों से होकर गुजरी। कलक्टर ने खुद बिना मास्क घूम रहे लोगों को मास्क दिए और इसका महत्व समझाया।

अधिकारियों ने दुकानों के भीतर जा जाकर स्थिति देखी और दुकानदार व ग्राहकों को मास्क दिए। मास्क पहन कर ही घर से बाहर निकलने की सलाह दी। रैली में पुलिस के जवान,महिला एवं बाल विकास विभाग की कार्मिक स्काउट गाइड, आपदा राहत की टीम भी मौजूद रही।

रैली में वाहन में लाउडस्पीकर के जरिए मास्क लगाने दो गज की दूरी रखने वह कोरोना से बचाव के सभी उपाय अपनाने के संदेश दिए गए।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रदीप कुमार सोलंकी द्वारा महानगर मल्टीमीडिया प्रा.लि. जी-848, फेज-3, रीको सीतापुरा, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं 227-हीरालाल की गली, झालाना, मालवीय नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - प्रदीप कुमार सोंलकी, मो. 93510 01100, E-mail: atulyasansar@gmail.com, संपादकीय कार्यालयः सांगानेर एयरपोर्ट पुलिया के पास, सांगानेर, जयपुर